oct 2019

RNI No. KERHIN/2017/70008

ISSN No. 2456-625X

शोध सरोवर पत्रिका

10 अक्तूबर 2019, वर्ष 3, अंक 12

'आरती', फॉरेस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम -14

www.shodhsarovarpatrika.co.in

150

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की
150 वीं जयंती

Principal
N.S.S. College
Pandalam

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका

अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, केरल राज्य।

स्व.के.जी.बालकृष्ण पिल्लै विशेषांक

Scanned with CamScanner

सुनीता जैन की कहानियाँ

◆डॉ. लक्ष्मी. एस.एस

हिंदी महिला रचनाकारों में सुनीता जैन की अपना अलग पहचान है। सुनीता जैन जी का व्यक्तित्व अद्वितीय है। इनका जन्म 13 जुलाई 1941 में अम्बाला में हुआ। उनकी माध्यमिक शिक्षा लुधियाना में हुई। उनको लेखन के प्रति लगाव बचपन से ही है, 'वीर अर्जुन' और 'दैनिक प्रताप' में अनेक रचनाएँ लिखीं तथा बाल वृष्ठों के बड़े पुरस्कार भी मिले। सुनीता जैन जी का विवाह 17 नवम्बर 1956 में डॉ.आदिखरलाल जैन जी से हुआ। कुछ समय बाद ही सुनीता जी अमरिका स्थान कर गईं। अमेरिका में ही इनके एक बेटी अन्नू किरण तथा बेटे रविकान्त का जन्म हुआ।

श्रीमती सुनीता जैन की रचना-यात्रा 1962 में उपन्यासों से आरंभ हुई। उपन्यास के साथ कहानी, कविता, अनुवाद आदि अनेक विधाओं में उन्होंने कार्य किया। 'बोज्यू'(1964, कमलवीर प्रकाशन), 'सफ़र के साथी'(1966, पूर्वोदय प्रकाशन), 'बिन्दु'(1977, पराग प्रकाशन) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'हम मोहरे दिन रात के'(1970, सुरुचि प्रकाशन), 'इतने बरसों बाद' (1977, पूर्वोदय प्रकाशन) आदि सुनीता जी की कहानियाँ हैं। आपने हिंदी साहित्य के साथ-साथ अंग्रेज़ी में भी अनेक उपन्यास, कहानियाँ तथा कविताएँ लिखी हैं। सुनीता जी को अनेक पुरस्कार भी मिले हैं- 1988 में 'रंगारति' कविता (1986, नेशनल प्रकाशन) को 'निराला नामित पुरस्कार' दिया गया। 1995 में 'सुलोचिना लेखिका सम्मान' मिला। 1996 में 'साहित्यकार सम्मान' (हिन्दी अकादमी, दिल्ली) से मिला। 1998 में 'महादेवी वर्मा सम्मान' और सन् 2004 में 'पद्मश्री' भी उन्हें मिले।

सुनीता जैन की कहानियाँ नारी जीवन के मार्मिक पहलुओं का सूक्ष्म वर्णन है। 'हम मोहर दिन रात के' नामक कहानी संग्रह (1970,सरुचि प्रकाशन) उनका प्रथम कहानी संग्रह है। 'इतने बरसों बाद'(1977, पूर्वोदय प्रकाशन) नामक कहानी संग्रह में लेखिका की पन्द्रह कहानियाँ संकलित हैं जो पाठकों को बहुत प्रभावित करती हैं। 'पाँच दिन'(2003, सार्थक प्रकाशन) कहानी संग्रह में आपकी आठ कहानियाँ संकलित है जो पाठकों को आकर्षित करती हैं।

सुनीता जी की कहानियों में परिवार एक प्रमुख इकाई है। परिवार समाज का एक अनिवार्य अंग है। परिवार साधारणतया पति, पत्नी और बच्चों के समूह को कहता है, पर दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वासवाले रक्त सम्बन्धियों का समूह है।

दाम्पत्य जीवन

परिवार में दाम्पत्य सम्बन्ध को महत्वपूर्ण स्थान है। श्रीमती सुनीता जैन की कहानियों में सफल दाम्पत्य और असफल दाम्पत्य का चित्रण हुआ है। 'कमाई' कहानी की आशा और अवध का सफल दाम्पत्य है। अवध अमरीका में अपने परिवार के साथ रहता है। आशा गौड़ ब्राहम्ण होकर भी अमरीका के अस्पताल में नर्स - सहायिका का काम करती थी। दोनों के मन में काम

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

के प्रति इज़्ज़त है। 'महानगर' कहानी में विजयबाबू और उनकी पत्नी दोनों साथ-साथ अपना दायित्व निभाते हैं। विजयबाबू एक ज़िम्मेदार पति है, जब उनकी पोस्टिंग पिठौरगढ़ हुई थी, तब उस शहर में कोई चीज़ उपलब्ध नहीं थी। उनकी पत्नी सब समाकर गृहस्थी संभालती है। 'खटराग' कहानी की सुधा और 'हेम' आपस में झगड़ते ज़रूर हैं, लेकिन दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं। 'पालना' कहानी में रजत और सुलक्षणा का सफल दाम्पत्य जीवन दिखाई देता है। यह पति-पत्नी निस्संतान थे, और वे अमरीका में रहते थे। रजत की माँ मिसेज़ नाथ एजेंट द्वारा एक छोटी बच्ची को अस्पताल से गोद लेती है। वह रजत और सुलक्षणा के ज़िन्दगी में आशा की किरण लाती है। आपसी प्रेम और सुःख-दुःख बाँटने की प्रबल इच्छा से ही दाम्पत्य सम्बन्ध सफल होता है।

पति-पत्नी के बीच तनाव, त्याग और समर्पण का अभाव दाम्पत्य सम्बन्धों को असफल बनाता है। 'परदेश' कहानी में इस प्रकार की समस्या उद्घाटित हुई है। जैक और मिम दोनों पति-पत्नी हैं। दोनों बच्चों के सामने ही झगड़ते हैं। यह सब देखकर बच्चे भी परेशान हो जाते हैं। मिम कहती है कि, "न्यूयोर्क स्टेट में तलाक इतनी कठिनाई से मिलता है, अन्यथा जल्दी ही उसका पीछा छूट गया होता। तलाक जब तक मिलता नहीं वह यूँ ही आकर हर शनिवार बच्चों को मिलने के बहाने उसे सालता रहेगा।"[1] इस तरह 'परदेस' कहानी में असफल दाम्पत्य का चित्रण हुआ है। 'भरोसा' कहानी में आशा का पति यतीन अपने ऑफिस की मिस शर्मा के साथ किताब प्रकाशित करता है। इस सिलसिले में उसे रोज़ाना मिस शर्मा के यहाँ जाना पड़ता है। वास्तव में यतीन और मिस शर्मा के बीच कुछ भी नहीं है, लेकिन आशा के मन में पति यतीन के प्रति संदेह है, और इसका बुरा असर उनके दाम्पत्य जीवन पर भी पड़ता है। 'मंगलसूत्र' कहानी में डोरा का विवाह बॉब के साथ हुआ था। वह इंजीनियरिंग में पढ़ता था डोरा दो जगह सुबह और शाम नौकरी करती थी।वह बच्चा चाहती थी और बॉब को बच्चे पसंद नहीं थे। इसी कारण मानसिक तनाव उपस्थित हो जाता है और दोनों अलग होने का निश्चय कर लेते हैं। 'बिन्दु' कहानी में कृष्णकान्त अपनी पत्नी बिन्दु को छोड़कर, बच्चे अजय को लेकर इंग्लैण्ड चला जाता है। फिर बिन्दु अपनी बुआ के साथ अमरीका जाती है। वहाँ कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में बिन्दु काम करती है। कृष्णकान्त को दिल का दौरा पड़ने की खबर सुनकर बुआ भी बिन्दु से कहती है कि तुम्हें कृष्णकान्त के पास जाना चाहिए। 'पाँच दिन' जानकी और भास्कर की कहानी है, इसमें प्रोफेसर जानकी अपने छोटे बेटे मनु के साथ दिल्ली में रहती है। मनु अविवाहित है। बड़ा बेटा ललित अमरीका में है। बेटी मीरा शिकागो में रहती है।जानकी गर्मियों के दिनों में बड़े बेटे को मिलने अमरीका चली जाती है। दस दिन वहाँ रुकती है तो पति-पत्नी में झगड़े होते हैं। इस कहानी के ज़रिए लेखिका ने यह बताने की कोशिश की है कि आज के माहौल में अणु परिवार में पति-पत्नी भी बच्चों के सिवा घर में कोई नहीं चाहते हैं, वे स्वतन्त्र जीना चाहते हैं।

प्रेम

प्रेम एक पवित्र बंधन माना जाता है, जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों बंधकर एक-दूसरे को धन्य मानते है। आज के ज़माने में स्त्री-पुरुष प्रेम करना चाहते हैं, लेकिन वे

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

पैदा करना नहीं चाहते। सुनीता जी ने अपनी कहानी में विवाहपूर्व प्रेम सम्बन्ध और विवाहोत्तर प्रेम सम्बन्ध के बारे में लिखा है। 'विनिमयन सुबोध' कहानी में सुबोध शोभा का विवाहपूर्व प्रेम सम्बन्ध है। सुबोध और शोभा एक दूसरे से बेहद जुड़ जाते हैं [illegible] लेकिन शोभा शेखर के परिवार से नहीं और इस कारण वह पिता को इस बारे में कुछ कह न सकी। उसका विवाह दूसरे लड़के के साथ हो जाता है। पर सुबोध उसकी यादों में ही हमेशा खोया रहता है।

'कहानी की खोज में' कहानी में शुभा और सुमंत का विवाहपूर्व प्रेम-सम्बन्ध है। इस कहानी में सुमंत और शुभा पति-पत्नी है। एक दिन सुमंत ऑफिस से घर लौटने के बाद शुभा कहती है कि खाना आज बाहर करते है, दोनों खाना खाने के लिए लगूना में चले जाते है। वहीं शुभा का पुराना आशिक विजय अपनी पत्नी के साथ दिखाई देता है। तब शुभा अपने अतीत में खो जाती है। 'परदेस' कहानी विवाहोत्तर सम्बन्ध पर आधारित है। रूपा और उसके पति के बीच दाम्पत्य सुख नहीं है। क्योंकि उसको रूपा के विवाहपूर्व सम्बन्धों के बारे में पता लग गया था। वह रूपा को उसकी बेटी से भी अलग कर देता है और उन दोनो का आपसी सम्बन्ध भी बिगड़ जाता है। 'इतने बरसों बाद' कहानी में प्रो.जॉर्ज और सहयोगी विवाहित प्राध्यापिका के विवाहोत्तर सम्बन्ध है। दोनों भी विवाहित है। प्रो.जॉर्ज और सहयोगी प्राध्यापिका दो-तीन दिन तक घर नहीं लौटती थीं।

आर्थिक विषमताएँ

अर्थाभाव की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है। अर्थाभाव के कई कारण हो सकते हैं जैसे संयुक्त परिवार, अति लाडप्यार, रूढ़ि-परम्परा, अज्ञान, बीमारी, दुर्घटनाएँ आदि। [illegible] कहानी में अर्थाभाव की समस्या को चित्रित किया गया है। [illegible] था। वहीं वह पैदा हुआ था, वहीं पला था, पर हर दिन के साथ उसकी घुटन यहाँ के लिए बढ़ती जाती थी। मनीन्द्र कहता है 'फिर उसे उस धर्मपुरा में वापसी के कीड़े-सी जिन्दगी में लौटना ही क्या है, लौटेगा भी कैसे और क्यों? उसने ये [illegible] पिता, बीमार माँ को लेकर कहाँ रह सकेगा दिल्ली में। यहीं से दस हजार रुपये कमाने के ख्वाब को भेज चुका है। दो-ढाई सौ रुपये महीना तो यूँ ही भेज देता है।'[2] इस तरह मनीन्द्र अपनी व्यथा व्यक्त करता है। 'मीता' कहानी में आर्थिक समस्या व्यक्त हुई है। एक दिन मीता मैडम का पल्लू किसी लड़की ने छू लिया। मैडम कहकर वह रोने लगती है, तब मीता उसे रोने की वजह पूछती है। वह लड़की कहती है- "मैडम, मेरी फीस माफ करवा दीजिए। मेरे पापा बहुत बीमार है, काम पर नहीं जाते। माँ फीस नहीं दे सकेगी, तो मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ेगी।"[3]

सांस्कृतिक प्रभाव

संस्कृति का अर्थ है - संस्करण, परिमार्जन, शोधन, परिष्करण आदि। डॉ. जगदीश नारायण दुबे के मतानुसार 'मानव के रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला, परम्परागत अनुभव,

KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE
Dept. of Hindi

जीवनयापन की पद्धति अर्थात् के बोधक संस्कारों का नाम 'संस्कृति' है।[5]

भारतीय संस्कृति की प्रांतिक महत्वपूर्ण विशेषता समन्वय की रही है। पाश्चात्य उपभोक्तावादी जीवन दर्शन ने भारतीयों के सुख की व्याख्या बदल दी। युवा पीढ़ी स्वच्छंद जीवन का रस आस्वादने लगी। 'हिमा' कहानी में सुधा का बेटा अमरीका में लेक्चरर है और वहाँ के कॉलेज में पढ़ाने का कार्य करता है। इस कहानी के माध्यम से उन्होंने अमरीका के छात्र किस तरह कॉलेज में बैठते हैं, इसका सुन्दर अंकन किया है। सुधा का बेटा कहता है "यहाँ विद्यार्थी भी खूब हैं, लड़के पैर मेज पर रख जूते मेरी ओर कर बैठते हैं, लड़कियाँ बिना रुके चुइंगम चबाती हैं, चाकलेट चूसती रहती हैं, बैठने का ढंग बड़ा असभ्य लगता है, पर अब आदी हो गया हूँ।" इस कहानी में पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन हुआ है। 'मंगल सूत्र' कहानी में इस बात का बहुत अच्छा चित्रण डोरा के माध्यम से हुआ है। डोरा पहले एलफ्रेड से प्यार करती है। एलफ्रेड सबसे खूबसूरत धनी लड़का था। उसने एक प्रेमिका के गर्व से उसे स्वयं को सौंप। बाद में एलफ्रेड बदला। वह उसकी खूबसूरती से थक गया। वह नवीनता चाहता था। एलफ्रेड उसे छोड़ चला गया। तभी बॉब से परिचय हुआ। बॉब एलफ्रेड का दोस्त था और उसे उसपर आसक्ति थी। बाद में दोनों ने कोर्ट में विवाह किया। बॉब को बच्चे पसन्द नहीं थे। इस कारण दोनों का सम्बन्ध - विच्छेद हो गया। 'बाढ़' कहानी में केरल संस्कृति का चित्रण हुआ है। गुणमाला सरला की सास है। गुणमाला को तेज बुखार आया है। वह कहती है कि बहू, देख मुझे बुखार है क्या? सरला ने अपनी बेटी ऋतु से सम्बोधित करने को कहा। किन्तु ऋतु रही भी वह सीता बोलकर नहीं आई, न सरला भी अपने ... सरला आधुनिक विचारवाली पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नारी है। वह सास को तेज बुखार होने के बाद भी महीनेवाले घर से लड़ा खींचने लगी।

नारी जीवन

प्राचीन युग में नारी को शिक्षा, अधिकार और सम्मान प्राप्त थे, परन्तु इसमें सामान्य नारी का स्थान अज्ञात था। मध्ययुग तक नारी की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। लेकिन धीरे-धीरे नारी ने विविध क्षेत्रों में प्रवेशकर अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया, परन्तु उसका शोषण आज भी जारी है। 'पार्वती जब रोएगी' कहानी में पार्वती के पति द्वारा शोषण का चित्रण हुआ है। सतीश सोनिया के साथ विवाह करना चाहता है। पार्वती सीधी, सादी भारतीय संस्कृति में पली हुई लड़की है। सोनिया के साथ रहते समय उसे पार्वती की याद नहीं आती थी। "नहीं, उसे पार्वती से प्यार नहीं था। उस अनपढ़ गँवार लड़की से भला किसे प्यार हो सकता था।"[6] सतीश की पत्नी पार्वती है। उसके होते हुए भी वह सोनिया से प्यार करके पार्वती का शोषण करता है। 'खंडहर' कहानी में पति द्वारा कल्पना के शोषण को उजागर किया गया है। कल्पना के पति ने अन्य महिला के मोह में घर छोड़ दिया। "वह रचना को तुरन्त जलपाईगुड़ी से चुपचाप लौटी अपने पास। बच्ची हॉस्टल में भर्ती करवा दिया। इस डर से कि लोग यह न पूछें तुम्हारा पिता कहाँ है, कौन है?"[7]

श्रीमती सुनीता जैन ने अपनी कहानियों में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी परिस्थितियों का

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI N.S.S. COLLEGE PANDALAM, PTA (Dist.) KERALA - 689 501 Phone: 04734-252221
Scanned with CamScanner

किया है। जीवन के हरेक पहलू को देखने का उनका अपना नया दृष्टिकोण उनकी कहानियों से व्यक्त हुआ है। सुनीता जैन की रचनाओं की विशेषता यह है कि हर एक रचना अपना अलग अस्तित्व लेकर पाठक के समक्ष उपस्थित होती है जो मार्मिक है और पाठकों के दिल को छू लेने में समर्थ और सक्षम भी है।

सहायक ग्रन्थ

1. सुनीता जैन अब तक (कहानी संकलन), संपादक- डॉ. कृष्णदेव शर्मा
2. सुनीता जैन का कथा - साहित्य - डॉ. प्रविण अंनतराव शिंदे
3. साठोत्तर हिंदी कहानी - डॉ.के.एम. मालती

संदर्भ

1. सुनीता जैन अब तक (कहानी), संपादक- डॉ. कृष्णदेव शर्मा पृ. 31
2. वही, पृ. 20
3. वही, पृ. 163
4. सुनीता जैन का कथा - साहित्य पृ. 137
5. सुनीता जैन, अब तक (कहानी), संपादक- डॉ. कृष्णदेव शर्मा पृ. 6
6. वही, पृ. 21
7. वही, पृ. 74

◆ सहायक अध्यापिका
एन.एस.एस कॉलेज,
पन्तलम, केरल राज्य।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.33 के आगे)

10. 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के संस्थापक कौन थे?
(अ) एम.के.वेलायुधन नायर
(आ) आचार्य पी.जी.वासुदेव
(इ) के.वासुदेवन पिल्लै
(ई) विद्वान के. नारायण

11. 'राष्ट्रवाणी' किस संस्था की पत्रिका थी?
(अ) केरल हिन्दी प्रचार सभा
(आ) तिरुवितांकूर हिन्दी प्रचार सभा
(इ) केरल हिन्दी साहित्य मंडल
(ई) हिन्दी विद्यापीठ

12. 'अभयकुमार की आत्मकहानी' के लेखक कौन हैं?
(अ) इ.के. दिवाकरन पोट्टी
(आ) डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै
(इ) भारती विद्यार्थी
(ई) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

13. 'उज्जयिनी' काव्य के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?
(अ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर
(आ) के.जी.बालकृष्ण पिल्लै
(इ) जे.आर.बालकृष्णन नायर
(ई) हरिहरन उण्णित्तान

(शेष पृ.सं. 46)

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734 252221
N.S.S. COLLEGE
Scanned with CamScanner